राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)
(पीजीडीएईएम) राजेन्द्रनगर, हैदराबाद – 500 030, तेलंगाना

कृषि विस्तार प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीएईएम)
द्वितीय सेमेस्टर के लिए सत्रीय कार्य विषय:
एईएम 201: ग्रामीण समाजशास्त्र (2 क्रेडिट)

1) अपने क्षेत्र में एक सामुदायिक रणनीतिक योजना विकसित करें।
2) कृषि में समाज की भौतिक संरचना का विस्तार से वर्णन करें।
3) विकासशील किसानों में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका का वर्णन करें।
4) सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांतों और कारकों का वर्णन करें। कृषि विस्तार को तकनीकी कारक कैसे प्रभावित करते हैं।
5) सामाजिक प्रक्रिया को परिभाषित करें। विभिन्न प्रकार की सामाजिक प्रक्रियाओं का वर्णन करें।
6) कृषि और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के माध्यम से अपने क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन की रणनीति विकसित करें।
7) एक विस्तार अधिकारी के रूप में, अपने कार्यक्षेत्र में विस्तार सेवाओं के वितरण में बाधा डालने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक अड़चनों की व्याख्या करें और बाधाओं को दूर करने के उपाय सुझाएं।
8) कृषि विकास के लिए देशी तकनीकी ज्ञान (आईटीके) को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीति विकसित करें।
9) ग्रामीण आजीविका सुरक्षा लाने के लिए ग्रामीण संसाधनों और सामुदायिक संपत्तियों के प्रबंधन में कृषि विस्तार की भूमिका का वर्णन करें।
10) कृषि विकास के लिए सामाजिक संपर्क और इसके निहितार्थ के बारे में विस्तार से चर्चा करें।

एईएम 202: कृषि व्यापार प्रबंध (4 क्रेडिट)

1) किसान कृषि विकास का केंद्र बिंदु है। किसानों की उद्यमिता विकास प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाएं।
2) वर्तमान कृषि विपणन प्रणाली की चुनौतियाँ और अवसर - अपने राज्य का उदाहरण देते हुए इस पर चर्चा करें।
3) भारत में कृषि विपणन के बदलते परिदृश्य में, विस्तार कर्मियों को कौन सी नई भूमिकाएँ निभानी चाहिए?
4) मार्केट इंटेलिजेंस और मार्केट इंफॉर्मेशन सर्विसेज प्रोड्यूसर्स, एक्सटेंशन सर्विस प्रोवाइडर्स, रिटेलर्स और उपभोक्ताओं को उनके लाभ/संतुष्टि को अधिकतम करने में कैसे मदद करती हैं?
5) कृषि-व्यवसाय उद्यमिता हेतु क्षमता निर्माण के लिए आवश्यक घटकों पर प्रकाश डालिए। कृषि-व्यवसाय उद्यमिता के चरणों की व्याख्या करें।
6) भारतीय ग्रामीण बाजार की मौलिक विशेषताएं क्या है । इसकी सफलता के लिए विकसित किये जाने वाले ग्रामीण विपणन रणनीतियों को बताएं।
7) किसान बाजार - किसान उत्पादकों, बाजार संचालकों और उपभोक्ताओं द्वारा अनुभव की गई बाधाएं और उन्हें दूर करने और प्रणाली में सफलता लाने के लिए आपके द्वारा सुझाए गए उपाय।
8) भारत में कृषि-विपणन में सुधार के लिए रणनीतियाँ।
9) बाजार आधारित कृषि विस्तार में उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों को अधिकतम लाभ देने वाली रणनीतियाँ क्या हैं?
10) कृषि विकास में कृषि उद्यमियों की भूमिका की व्याख्या करें। अपने कार्य क्षेत्र में कृषि उद्यमियों को विकसित करने के लिए एक रणनीति विकसित करें।
11) एफपीओ के प्रचार में विस्तार की भूमिका का वर्णन करें।
12) अपने राज्य में मौजूदा कृषि व्यवसाय क्षेत्रों को हाइलाइट करें। विकास के लिए उपलब्ध अवसरों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
13) आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन की प्रक्रिया और प्रमुख चालक और खेत की आय में सुधार के लिए आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का महत्व।
14) विश्व व्यापार संगठन ने भारतीय कृषि परिदृश्य को कैसे प्रभावित किया और विस्तार सेवा प्रदाताओं से क्या सबक सीखा जा सकता है?
15) किसानों को फसल बीमा के लिए क्यों जाना चाहिए? यह किसानों को जोखिम से बचने में कैसे मदद करता है?

एईएम - 203: कृषि विकास हेतु नियोजन (4 क्रेडिट)

1) कृषि में जोखिम और अनिश्चितता को कम करने के विभिन्न तरीकों की व्याख्या करें।
2) अपने परिचालन क्षेत्र के लिए एक कृषि योजना विकसित करें।
3) एक औसत किसान को ध्यान में रखते हुए अपने परिचालन क्षेत्र में कृषि से जुड़े संभावित आय और व्यय/नकद बहिर्वाह को उजागर करते हुए एक दस्तावेज तैयार करें।
4) अपने परिचालन क्षेत्र में एक या एक से अधिक एफपीओ को औचित्य के साथ बढ़ावा देने के लिए एक प्रस्ताव विकसित करें और सदस्य-किसानों को लाभ सुनिश्चित करने के लिए उसी का प्रबंधन करने की योजना बनाएं।
5) नाबार्ड की योजनाओं के तहत वित्तीय सहायता से एक कस्टम हायरिंग सेंटर (सीएचसी) स्थापित करने के लिए एक एफपीओ के लिए एक व्यवसाय योजना विकसित करें।
6) कृषि में मूल्य श्रृंखला प्रबंधन के लाभों को लिखें।
7) भारत में कृषि विस्तार के संस्थागत ढांचे की व्याख्या करें।
8) उपयुक्त उदाहरणों के साथ परियोजना की स्थिरता की व्याख्या करें।
9) कृषि विकास के लिए सामाजिक लेखा परीक्षा के महत्व का वर्णन करें।
10) विकास कार्यक्रमों के लिए निगरानी और मूल्यांकन मानकों और नैतिकता पर चर्चा करें।

204: सतत कृषि विकास हेतु विस्तार (4 क्रेडिट)

1) जैव विविधता को परिभाषित करें। जैव विविधता के नुकसान के प्रभाव और उसके संरक्षण के तरीकों के प्रभाव के बारे में विस्तार से बताएं।
2) विभिन्न मृदा और जल संरक्षण उपायों के महत्व पर चर्चा करें।
3) अपने क्षेत्र के छोटे किसानों के लिए एक सफल मॉडल के साथ एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएस) की अवधारणा और आवश्यकता की व्याख्या करें।
4) बारानी कृषि में बाधाओं की गणना करें और वर्षा आधारित खेती की चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न रणनीतियों का वर्णन करें।
5) सतत कृषि और एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) का वर्णन करें। आईपीएम के कार्यान्वयन के लिए उपकरणों और रणनीतियों की व्याख्या करें।
6) जलवायु परिवर्तन का भारतीय कृषि पर प्रभाव और इसे दूर करने की रणनीतियों पर चर्चा करें।
7) किसानों द्वारा अनुभव की गई चुनौतियों के आधार पर अपने क्षेत्र की मुख्य क्षेत्र (कृषि और संबद्ध क्षेत्रों) के विकास के लिए एक रणनीति तैयार करें।
8) स्थायी पशुधन उत्पादन के लिए पोषक तत्व प्रबंधन के महत्व पर चर्चा करें।
9) भारतीय डेयरी, मांस और कुक्कुट उद्योग की स्थिति का वर्णन करें।
10) मात्स्यिकी क्षेत्र के लिए राज्य-विशिष्ट कार्य योजना तैयार करें।
11) एक विस्तार अधिकारी के रूप में अपने कार्यक्षेत्र में प्रमुख विविध उद्यम (सेरीकल्चर/मधुमक्खी पालन/मशरूम आदि) के लिए एक कार्य योजना तैयार करें।